अध्याय- घुर्ण

4. मराठों की युद्ध पूर्व उपलब्धियाँ
4.1 राजपूत-मराठा सम्बन्ध
4.2 जाट- मराठा सम्बन्ध
4.3 दत्ता जी की तिनिधियाँ का संक्षिप्त परिचय एवं उनकी उत्तरार्ध की लड़ाईयाँ
4.4 शुकलाल का लेखांक
4.5 वरारू घाटखंड बुरादी घाटखंड की लड़ाई और दत्ता जी की मृत्यु
4.6 सदाशिव राव माथु का संक्षिप्त परिचय और सदाशिवराव माथु का दिल्ली पर आक्रमण 1760 ई.
4.7 दिल्ली पर विभंग
4.8 कुंजपुरा की लड़ाई 17 अक्टूबर 1760
अध्याय-४
मराठों की युद्ध पूर्व उपलब्धियाँ

४। राजपुत मराठा सम्बन्ध

मारवाड़ के राजा अम्बरसिंह की मृत्यु सन् १७५४ में हुई। उसके बाद उसका पुत्र रामसिंह गढ़दी का अधिकारी था, लेकिन अयोग्यता के कारण राजा न बन सका। उसके चौथे भाई विजय सिंह ने गढ़दी छीन ली। अतः रामसिंह ने जयप्पा तिन्थिया की मदद से गढ़दी पर कब्जा करने का दिशानिर्देश किया। रामसिंह की मदद के लिए तिन्थिया मारवाड़ तक आया। अब्दूर ने रामसिंह से मदद का बनारसी होने पर उसने अपनी सेना के दो दल फ़िसले। एक दल का मुखिया चंदन हुआ और दूसरे दल का सेनाध्यक्ष अपने घोटे भाई दल जी सिन्धिया को कपड़ा। उसके बाद वह अब्दूर से रथवाना हुआ। उधर विजय सिंह ने बड़ी भारी सेना बनानी की। उन्होंने गर्व में छानी डाली। इसी के पास दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। जिसमें मराठों की जीत हुई। विजय सिंह फिर से चौथा बचकर नागोर भाग आया। जयप्पा तिन्थिया ने इसे भेद कर विजयसिंह को राशिद पर लाने की सौगात पर उसे घेरा लाते आठ वर्ष करने पर बी शहर पर कब्जा न हो पाया। विजयसिंह ने कई स्थानों से सहायता पाने का प्रयत्न किया, लेकिन उन्हें सफलता मिली नहीं। अन्ततः उसने तीन आदमी ने अकेले जयप्पा तिन्थिया की हत्या करवाई। तत्पश्चात दल तिन्थिया ने उसपर अभयारण्य युद्ध किया।

विजयसिंह गर्व भाग गया। १८ माह बाद उसने मराठों से सन्धि की। उसके नागोर, गढ़दी ऊद्दीप भाग रामसिंह को किले और मराठों को लड़ाई करने के लिए अब्दूर शहर और उसके आस पास का हैदर मिला। इस तरह मराठों के और राजपुताओं में सम्बन्ध बिगड़ गये।
मालवा में मराठों की वृद्धि ने राजपूताना में आक्रमणों की सफल
उपस्थित कर दी थी। 23 नवम्बर 1729 को मालवा के खेतीदार गिरिधर राय
को मराठों ने पराजित कर मार दिया। ताथा ही उसका चेतना मार दयाबहादुर
भी मारा गया। मल्हार राय हील्कर और रानों की सिन्धिया ने 22 अप्रैल
1734 को दुंदी पर आक्रमण किया। उसके समय राजपूताना में भय का वातावरण
पैल गया। जयसिंह ने अपने राज्यों की मराठों से ब्यांसे और बूढ़मार को रोकने
के लिए एक सामूहिक योजना काने हेतु राजपूताने के तमंगे राजाओं का सम्मेलन
बुलाया। परन्तु इत्यादि का नाम पूर्ण परिणाम न निकला। 21. सितम्बर 1741
को जयसिंह की मृत्यु हो गयी।

ईवरी सिंह और माधव सिंह के मध्य सत्ता युग में मराठों ने ईवरी सिंह
का पक्ष लिया। माधव सिंह की मदद उसका चारा जगतीसिंह करना चाहता था।
उसे मारवाड़ के लिए कुछ किया। तेजप हार्दिक सिंह ने मराठों की सदस्यता से सम
1745 में हरा दिया। दिसंबर 1750 में ईवरी सिंह ने अलमस्तिका कर ली
तो माधव सिंह ने जयपुर की गद्दी पर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसे
मराठों के विकल्प नीति अपनाई।

मराठों के राजपूताने में बार बार आक्रमणों और राजपूतों की आपत्ती
लक्षाइ में हरतोफ करते रहे। दोनों के बीच तम्मिल बढ़ हो गयी। मराठों
द्वारा चौथ एवं तरीका मुझी बूढ़ियों से भी राजपूत मराठों से देश करते थे। राजपूतों
द्वारा जयपुर सिन्धिया की पोखरे से की गयी हत्या ने सिन्धिया और राजपूतों
में शक्ति को बढ़ा दिया था।

4.2 जाल-मराठा सम्बन्ध

सन् 1751 में बादशाह अव्वलुली ने हिंदुस्तान पर चढ़ाइ की तै
दिल्ली के बादशाह ने लाहौर और मुस्ताना से उसे लापत पर अपने प्रभाव बढ़ाये।
बाघाग का कवीर तफदरज़ग उस वक्त लोकों से युद्ध करने में च्यूरत था। दिल्ली लोगों पर उसे बाघीर और भूरति ठहर जाने की बात मालूम हुई। जब जानकर उसे बड़ा हुआ हुआ। इस कारण बाघाग और तफदरज़ग में अनबन हो गयी। गाजी उद-दीन का बेटा मिसताम-उद-दीन दिल्ली में था। उसे गाजी-उद-दीन हिछाब देकर बाघाग का बख्ती लाया गया। तफदरज़ग को बाघीर से हटा कर बाघाग का नामक हुस्ते सरदार को यह पद दिया गया। इससे तफदरज़ग चिंतक उसे मरतपुर नैवा तुरजमल जात की सहायता से दिल्ली पर घृटा भाला। यह गाजी तक भ्राय था के बाद वह उज्जवल कर जाम चाला गया। गाजी-उद-दीन ने अपनी सहायता के लिए मल्हारराज होल्कर और जयप्रथा तिनिध्वा को बुलाया। मरतपुर ने तुरजमल जात को दबाने के लिए कुमेहर को थेरा। यहाँ हुई लड़ाई में मल्हारराज राय होल्कर के हजियों पुनः कडरेयाव की मृत्यु हो गई।

कडरेयाव की मृत्यु से मल्हार राय बहुत खुशी हुई। उसने प्रतिक्रिया की कि "तुरजमल जात का सिर बाढ़ कर कुमेहर की निंदा मधुम में सीखोगा, तबी भेला जीन तक होगा।" उसकी प्रतिक्रिया जानकर तुरजमल जात घबराया और अपनी रक्षा के लिए जयप्रथा तिनिध्वा को यह संदेश में कि "इससमय माहे माई हैं। और में छोटा माई हूँ वैसे भी को मेरी रक्षा की लिए।" उसने अपनी पगर्दी कैदी। तेजराम अपने स्वामी का तन्द्रा व पगर्दी लेकर जयप्रथा तिनिध्वा के पास गया। और तन्द्रा मारा था अर्थ लाई गयी। पगर्दी तिनिध्वा कैसिर पर रख दी। जयप्रथा तिनिध्वा ने अपने स्वामी विवाह के बाद तुरजमल जात की रक्षा के रूप में का निर्णय लिया।

तिनिध्वा अब जान बचाकर काम करने लगा। इस दौरे का काम ठीक से न हो रहा था। इतिहास अन्वित में 30 लाख रुपये लेकर मल्हारराज होल्कर ने तुरजमल से सहिष्ठ कर ली तथा जयप्रथा तिनिध्वा मारवाइ गया। इती समय
में छुटा। कि सुरजमल जाट को मुग़ल बादशाह अफस़साह की आतंतिक मदद थी। अतः गाजी-उद-दीन ने उसे पदच्युत कर होलकर की मदद से कैद कर लिया तथा अलगमगर दिलीय को शहू 1754 में बादशाह बनाया।

सुरजमल जाट और मराठे राज होलकर के सम्बन्ध मधुर न थे।

दोनों परतपर देख रहे थे। सुरजमल जाट ने हिंदू धर्म की रक्षा के लिए मराठे की मदद किया। मराठे का काम हिंदू राज्य स्थापित करना एवं अफसाह्न को प्या के बाहर निकालना था। मराठे सुरजमल जाट से चौंच लेते थे। वह रचनाओं अफसाह्न और लेखकों से पुण्य करता था। वह विभिन्न देशों से हिंदुस्तान को सुरक्षित रखा पाया था। इतने लिए महाराज नरेश सुरजमल जाट ने मराठे की धर्म धार्मिक तथा मदद की थी। उद्य के पुनः जवाहरसिंह ने भी मराठे के लाख मिलकर युद्ध दिये और हिंदू धर्म की रक्षा करने के लिए सैनिक करता रहता।

सदा हिंदीराज भाऊ के साथ महाराज नरेश सुरजमल जाट कुछ समय तक रहा। दिल्ली नीति के बाद उस पर कहेंगे को बनाकर तथा सदा हिंदीराज भाऊ द्वारा दीमान ए अग्नि की खर्च में सभी धार्मिक निकालने के कारण तथा गाजी-उद-दीन को ख़बर न बनाने के वह नाराज होकर मराठे का साथ छोड़कर महाराज चला गया। सदा हिंदीराज भाऊ ने उसे सरद कर लाने के लिए दागोलकर, गंगोक और बहूपत्रराज चिंगरियास को भेजा परतपर वह कैसी तरह नहीं माना। मराठे ने अपना तबसे महाकुछरी मिल इस तरह को दिया। जलना तब होने के बायकूड़ पानीपत की तीसरी लड़ाई के पवित्रतावर उसने मराठे की बूढ़ मदद की।

धार्मिक मराठा सैनिकों की धर्मता दुर्ग कापड़े लेकर नौकर कराया। धार्मिक मराठा की तिनविस्ता का भाषा महाराज चले गया। महाराज मार्ग की प्रतिविद द्वारा बदला महाराज में हुआ। महाराज मार्ग और उसके परिवार ने मराठा सैनिकों, कैदाधिकारों तथा उनके परिवार की तनातन धम से सेवा की।
4.3 दत्ता जी सिंधिया की उत्तर में लड़ाईयाँ

दत्ता जी सिंधिया का सैनिक परिवार

उत्तर भारत में मराठा शक्ति के सिंधिया और ठोलकर दो परिवार पर ध्यान आया था। मराठा राज्य के लिए जयापुरा सिंधिया, दत्ता जी सिंधिया और बनकों जी सिंधिया ने अपना बलिदान दिया था। रानी जी सिंधिया के पाँच बच्चे थे। जयापुरा, दत्ता जी और वोटिका उनकी विवाहिता पत्नी से उत्तम पुत्र और माधव जी और थुके जी अविवाहिता पत्नी थे।

जब सेलेक्ट और अध्यक्ष के नवाब सफदरजंग के बीच लड़ाई हुई तब उस तथ्यात्मक के लिए मराठों को बुनाया। मल्हाराभार ठोलकर और रानी जी सिंधिया का और दूसरा वन्धु जयापुरा सिंधिया उनकी लड़ालता के लिए गया। भरतपुर नरेश जुरबल ने उनका साथ दिया। इन तीनों की लड़ालता से सेलेक्ट, लेखक ने जाकर कुमारी हुई। यह मदद दिया और बंगलों में लाग गया। मराठों को उत्तर में जागीर भिड़ी तथा सेलेक्ट ने 50 लाख रुपये का वाताना की।

मल्हाराभार ठोलकर और जयापुरा सिंधिया दिल्ली की ओर भिड़े हुए थे। ऐसे समय में मराठों को निजाम ने लड़ाई पड़ा। निजाम के विलुप्त होने के लिए जो सेलेक्ट भिड़ी थी उसके नाथक रानों जी सिंधिया और उसके दो पुत्र दत्ता जी और माधव जी थे। रानों जी को निजाम में युद्ध किया था, पहले ही मृत्यु डाल गये। युद्ध में मराठों की जीत हुई। उनके मृत्यु के बाद दत्ता जी ने अपने जी को जयापुरा का उत्तराधिकारी घोषित करके मराठा सेना को दौड़ा दिया। दत्ता जी सिंधिया ने अफगानों और सेलेक्ट ने युद्ध किया। बरारी गाट या बुरादी गाट की लड़ाई में दत्ता जी आए गये। भागीरथी वार्दे उनकी धर्मवादी
दल्ला जी की उत्तर में लिखा गया—

दल्ला जी का उत्तर हिन्दुस्तान को खाना हुए तो पेशा लाकर बाजीराव ने उन्हें तीन काम बताये। पहले नाम लाउटर हुवे का प्रबंध करना। दूसरा नजीब-उद-दौला खाँ को दबाना और तीसरा काम शुष्क-उद-दौला की मदद से बंगाल पर चढ़ाई करना। वह काम की दल्ला जी ने साल 1759 में कर दिया वह स्तावक नदी तक गया और वहाँ से लाखा जी सन्निधाया और निम्न खाना को पंजाब के प्रबंध के लिए मनाकर रवान बंगाल पर चढ़ाई करने के लिए वापस आया। शुष्क-उद-दौला ने उससे कहा कि यदि तुम मुझे बजीराम दिल्ली दोगे तो हमें 50 लाख रुपए हुँगा। इसी तरह नजीब-उद-दौला खाँ ने कहा कि यदि तुम मुझे बजीराम दिल्ली दोगे तो हमें 30 लाख रुपए हुँगा। दल्ला जी ने दोनों की बातें पेशा को निखी पेशा को दोनों ही बातें पसंद न थी। नजीब खाँ की बात जानकर पेशाक दल्ला बीमार राज ने गया। तब दल्ला जी के मन में मल्हारराज होल्कर की बात बैठ गयी थीं जिसमें कि मल्हारराज होल्कर ने दल्ला जी की शक्ति का उदाहरण किया था कि यदि पानीपत की लड़ाई में पेशा की जीत हुई तो प्रावधानों की खैली घोटियाँ धीनों को ही मिलेंगी। हम लोगों का महत्व कुछ न रहेगा। इसलिए नजीब-उद-दौला को बताकर रखा होगा। अतः दल्ला जी ने नजीब खाँ से दोषित कर ली। उसी के मदद से बंगाल पर चढ़ाई करने का विचार किया। नजीब खाँ ने अपनी मोटी बातों से दल्ला जी को खूब कर दिया तथा एक माह के अन्दर शुष्क-उद-दौला के पास गंगा पर पुल बनाने का वचन देकर वापस चला गया। नजीब खाँ ने शुष्क-उद-दौला से बात की और मराठों को मार भगाने के लिए शीघ्र आने की निकाल। एक महीने बीत जाने पर भी जब नजीब खाँ की और से कोई खबर न मिली तो दल्ला जी ने उससे वह काम बल्क गुरू करने के
लिए निखा परन्तु बब तक शुजा-उद-दीला से उसकी बात पक्की हो गयी थी। अत: उसने लल्ल के फ्रा खत्म होने पर यह काम देखने । अब दल्ला जी की आख्याए उसे उसकी नीचता का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। उसके उसी की खबर लेने का निर्देश दिया। हंबुर ने पास यहुदा पार कर वह झोपाबंद में आया। इताली की सीर ते नवीब को दबाने के लिए उसने गोविन्द पन्त बुन्देला को लिखा। फिर वह वयय नवीब को ही आब मुंक जोताकर लेखाक निया। इसी में गोविन्द पन्त बुन्देला गंगापार कर जलालबाद पहुँचा। वे दोनों मिलकर नवीब को तत्काल रिखायां की तौर रहने के लिए उन्हें घुला भिली कि शुजा-उद-दीला की फौज नवीब को ही लुप्तिका के लिए आ रही है। दल्ला जी ने गोविन्द पन्त बुन्देला को निशान कि शुजा-उद-दीला की फौज को नवीब नहीं से न भिलाये। शुजा-उद-दीला ध उपर गिरि गोलाई 10,000 फौज निकट जलालबाद पहुँचा। इन्हें मिटिकर मिला कि अभिमान अब्दली लाहौर पहुँचा। तैबा में बहुत कम होने के कारण मराठा तेला गंगा के इस पार चली आई।

दल्ला जी ने नवीब को दबाने का काम छोड़कर अब्दाली का सामना लेने की तैयारी में लग गया। हंबुर ने पास निमी पार कर उसने यह काम किया। दूसरी और ताबा की निमी विशाल विमय बापु पीछे हटो दल्ला जी की तेला से भिल गये। इसी में गोविन्द कोई न कोई बहाना बनाकर फुटटी मारने लगा। मुंक होकर दल्ला जी ने उसकी वापस जाने की आवश्यक धे दी और वयय अकेला अब्दाली को पीछे हटाने के लिए आगे बढ़ा। इसी में गंजी-उद-दीले बाजर ढाला और वह गोविन्द पन्त की रेल के साथ पीछे बना रहा। दल्ला जी ने होल्कर जो शीघ्र आने के लिए निकाल, वह वह नहीं आया। अत: गंजी का बीच उन्ही दल्ला जी को उठाना पड़ा।
4.4 शहीद का रूपांतर

लक्ष्मणराव ने 1759 ई. में बवाल से लौटने के बाद दर्रा जी सिंधिया ने श्रुति उद्दर्शन के राज्य से हीकर नवाब कीर जाने से चौथ बृहस्पति करने के लिए व्यक्ति का रूप धारण करने का विचार किया।

फरवरी 1759 ई. में बवाल का प्रबंधन करने के लिए लालग के तद बलुङ्गापुर जाने के पूर्व ही दर्रा जी ने कबीर के दिल्ली और आधिकारिक सेवा के कार्य प्रारम्भ करने की नीति अपना कर लिया था। कबीर की विलयत वह था कि अपना सबकुछ देखकर भी ताकाच्य अपने भाग्य को बनाये रखने में अत्यंत ही जितने ही इतिहासकारी में भाग लिया उससे तब कुछ दिया और वे निराधार हो गये। कबीर ने आचरणकार के समय महात्माओं को तत्कालीन विषय पाया। उसने विकास होकर उत्साहित करना धूल कर दिया। जब दर्रा जी लौट तो इस परिस्थिति के कारण दिल्ली में वहाँ पुरानी झड़ी मिली थे। नियुक्तिक धान की रचनात्मक तथा प्रतिविधि की नियुक्तिक की सबसे हाऊसिया श्रावक वाली कबीर के वाहिका में केन्द्रित थी। परंपरा सैनिक शावित नवीब खान के हाथों में होने के कारण उसकी आवाजों का पुल्ला न था। दर्रा की ने कठौता के साथ कबीर को एक तरफ परंपरा स्तरित कर दिया। परंपरा शावित हकिमाना में उसके पूर्व कार्यालय नवीब खान के स्थल कोई कार्यवाही न की। दर्रा की जिस बात का ध्यान हुआ फिर नवीब खान शावित हकिमाना चाहता है तो काफी देर हो चुकी थी। उसने ने विन्दु बनती हुंदेला के माध्यम से नवीब को अपने उद्देश्य में तहायक होने के लिए वहू की विवाह के साथ प्रस्ताव किया। परंपरा नवीब खान ने अपनी टाल मलोल के द्वारा उसकी इस योजना को विचार कर दिया।
दर्ता की इस नज़ीक़ाशी और अपमान से अत्यधिक क्षोभ हुआ तथा प्रचुर शक्ति के साथ नवजीब खाँ को घेर निया परन्तु नवजीब की चुप्पी तथा घोंघता के समक्ष यह प्रचुर शक्ति को निप्रभ कर दिया ग़ा।

शुक्लाल पर नवजीब खाँ के विचार लीखने के साथ या छुप्पत्तार देना की नैफ़क उसके विचार के तक पहुंचना था: असम्भव था। वक्ता गाँव में गौण के ओवाल के बैद्यन इतने कोसँड़े से उन्होंने यह जान लिया था कि पूरी रफ्तार से दौड़ते गांव के कुछ पहले में छाया तक दूसरे वाले थे। नदी के बिछारे बाली गूँगण कलाबुर व झटना पहुँचा देने वाली ही जानी कि घुला नहीं जा सकता। इसी पर उन्हें बाली बोटी घास और कंटोली खाद्याधिकार भी मकान देना चाहिये ही नहीं कि घुला नहीं जा सकता। आज़ादी खाँ को इन तब कहता जमा का लाभ करना पड़ा था। बाबत में यह नवजीब खाँ के आगमन का रास्ता खुश रहता की कहते थे। नदी में छुप्पा का कारण धारा का यहाँ में उभर सकता कहता यह नदी के समय छुप्पावार के हेम में खिले रखते थे। और शायद रहते थे। आज़ादी खाँ गोली बालू अन्य युद्ध सामग्री लाने में कोई प्रेशानी न होती थी।

दर्ता की तिरिक्षियाँ का विचार शुक्लाल से 2 मील दूर सैनिकों के प्रतिकूल के तीरानपुर गाँव के पास था। दर्ता की ने अपने विचार के लिए भिड़ती का एक अन्य ईमान का विचार था। वहाँ हे गराढ़ हमला करके खिले के साथ तीसे टकर लेने का प्रयास करना चाहते थे। परन्तु गराढ़ छुप्पत्तारों के लिए यह कहना नहीं था। वार महीने से अधिक चलने दावे इस धरे के साथ कहता हो गया था। गराढ़ों के गोली किती तरह भी नवजीब खाँ के विचार तक नहीं पहुँच सकते थे। अत: दोनों और दो की गयी गोलाबारी निर्णयक न नहीं करी। छोटे कोण से पैंका गया गोला आते पाल
के पहाड़ी दराँ में भिगता और बड़े कौन से फेंका गया गोला नजीब के शिविर के पार गंगा में भिगता था। इसी और नजीब शही के शिविर से की गयी गोलाबारी बहुत कारगर थी तथा शिविर तक पहुँचने का प्रयत्न करने वाले हुए सैनिकों को नियम सामान्य कर देती थी। दत्ता जी के पास इस समय करीब 40,000 लोग थे। जिनमें योद्धाओं का अधिकांश, अन्य की महिलावर के पुत्र शैलीवाल की सेनाएँ तथा सेनाड़ के स्थानीय दल भी सम्मिलित थे। नजीब के पास लगभग 10,000 सैनिक थे। यथापि नजीब शही के तालाब के इस समय में रुके हुए सैनिक अपूर्ण थे। परन्तु गंगा पार के सभी लोगें सबबी हार तरीक़े से उनकी तबाही कर रहे थे। जबकि गर्मी शही ते परे थे। नजीब जी के ते सभी वीरों, जिनको उन्हों आख्यायित थे, आधिकारिक साथ प्राप्त थे। इसके आलावा दोस्तो व बीच फुसूले सेनाओं का जलवायु मराठों सैनिकों तथा दक्षिणी नरल के पथिकों के लिए उपयुक्त न थे। जब भी मराठे आक्रमण करने की कोशिश करते तो उनके मारी नुकसान के साथ पीड़ा देखी जाती। इनमें दो आक्रमक कार्यक्रम रिहाया हुई। जिनकी सभी एक उपाय से अधिक लोग मारे गये। इसमें से एक आक्रमण में बीचा जी तिनिध्वाओं और उत्तम पुत्र कुमान्तराव मारे गये।

धेरा जिन्होंने अधिक समय तक जंग रहा था नजीब जी की क्रूरता उसकी सफलता दिलारही थी। अक्टूबर तिथि 1759 में अब्दल्लाह अब्दाली का रेनाचुरी बचाने के लिए फेंकने लोग की बचाव में भूमा आया था। मराठा विरोधी धर्म एंगलिश ने मिल जापुर नरसिंह माधविन्द के महाराजा राम बोलकर की रेना के विवेक कधि रहा अपनाया। बोलकर को पैसा से दर्दा की सगाई की गदल के लिए जाने की आदेश मिली थी। अक्टूबर के बाद में दंता जी ने नजीब शही को दबाने के लिए एक नयी योजना बनाया। गंगा के उद्गम में रिहाया एक स्थान का पता देता,
वाले जेता शुरू की मदद से गौतम श्री गुन्दल पन्ने 10,000 सैनिकों को
नीतिन नबीब खां के पुरूष भाग से नदी पार किया और रेलवे के बिलों जमालबाबा
पर आक्रमण कर दिया। इसके चारों और बश्चा बत गया था यहां नाम के
लिए मे सैनिक न थे। परन्तु नबीब खां के पुत्र जाधिता खां के आक्रमण पर
सम्पूर्ण रेलवे रेल से आक्रमण करते उसकी मदद के लिए आ गये थे। जब मराठे
सैनिक दंकिन मीडिया में उनके मकानों और सम्पत्ति बुट व जला रहे थे। उन्होंने
विलुप्त पर अधिकार कर लिया। गौतम पन्ने श्रुतिलाल के लागि तेंगा के पूर्वी
रिहाय़िर पर दक्षा पुल की ओर मुक्ति। मराठे पुल के लिये के कामों में उसका
हो गया इस प्रकार नाम के पुल से होने वाला नबीब खां का आवागमन का
मार्ग अस्थक हो गया। रेलवे के सबसे बड़े व्यवसायी हाफिजार्खांबल खां ने
नबीब खां को मराठों से मन्दिर करने का समाधान कर दिया। परन्तु नबीब खां किती
नारायणरूप में श्रुतिलाल नहीं छोड़ा और अनुपम समय की प्रतीक्षा की।
उसके बहुत तरह सैनिक चौकिने होकर टाइमिंग होने के पर्याप्त नबीब खां ने
सब तक प्रतीक्षा की जबतक कि उम्मीद को गोस्वामी के नेतृत्व में श्रुतिलाल
उद्देश्य द्वारा बनवें गयी अवध की सेना ने उसे मृतिका न दिया दी।
मराठों को करने के लिये नबीब खां के अब्दाली के पैचाब में होकर पात
ही आ पहुंचे और शीघ्र ही खाने की अपार्थं फैल गयी। सच्चाई यह
था कि अब्दाली बहुत हुए थे। परन्तु गौतम पन्ने के नेतृत्व में जो
सैनिक थे। तारत्त खां भेजे थे कर घर गोस्वामी की सेना से लड़े शीघ्र
ही वापस लौट आये। मराठों पद्म द्वारा जो लाभ उठाया जा सकता था।
उसे इस आक्रमण प्रक्रिया के कारण न उठाया जा सका। वर्तमान सैनिक
बड़ी शीघ्रता से लौटे थे। और फलस्वरूप कुछ लोग मारे गये या हुई दिए
गए। नबीब खां श्रुतिलाल से मामले की तीमा पर था क्योंकि उसके अधिकार
सैनिक अपने घरों की खाता करने के लिए उसे छोड़कर चल गये थे। मराठा सैनिकों का भाग्य ने लाखों दिया। क्योंकि उमराव ने गौरवानी जनवर खाँ की सहायता के लिए अपने पहुंच था। जनवर खाँ ने सफाया की की भूमि उद दोनों 30,000 सैनिकों के साथ उसके पीछे पीछे आ रहा है। जब बनको जी तिन्नियां ने गौरवानी पत्ता को पहुंच वायरल लोगों के लिए लिखा आयामक संबंध। इसी तरह अब्दाली के आने की पहली अफवाह भी छुए तब से विद्यमान ढाने के लिए रक्षा की प्रभावी रूप हुई। साला जी दत्ता जी के निधियों जैसे 10 नवम्बर 1759 को पहुंच अब्दाली ने लोगों का समाज का एक महीना पहले ही के साथ दिया गया था जिससे छुए तब से दत्ता जी की इसकी दोस्ती हो नहीं।

छुए तब से और छुए उद-दोनों ने हर तथा सहायता के लिए समबीती की बात। जब दत्ता जी एक तन कर रहा है तो 15 दिसम्बर को उन्हें बाजार उठा लिया और उनकी तारी को दो दिनों में विश्वास कर दिया। बाजार, बाजार उनमें काम करने लगे तथा अपना परिवार कृपया की भावना के नेतृत्व में इसी तरह और उसे अपने बाद तेज़ी के साथ दिल्ली जाने के लिए दर्शन अर्जर और अपने चुले सैनिकों के साथ वह स्वयं युद्ध कर ही अब्दाली का सामना करने के लिए चल पड़ा जिसके कारण उन्हें दोऊब में झुकने से रोका जाता था। और नज़ीब खाँ ने भी भिड़ने से रोका जा लेके। उनके नेतृत्व में लगभग 25000 छुके हुए छुए तब से। 18 दिसम्बर 1759 को खुम्बुदा के कारण से अद्वितीय पर युद्ध को पार का यह करना की और बढ़ा और अब्दाली की गतिविधि की जाने के लिए, उन्हें अजिम कर दिया। उन्हें बताया है कि अब्दाली का युद्ध करने का भूमि-मुख्यात्मक अपने 40,000 सैनिकों और अनेक सरदारों के साथ शानदार 15 दिसम्बर को अभ्यास के उद्देश्य में पहुंच चुका है और लालू, बेणोडा
और ऊत पर पड़ा दर्द हुआ है। अबमश शाह रच्य उसके पीछे आ रहा है।
दोनों सेनाओं के आगामों की पहली टक्कर 20 दिसंबर को हुई। बिना किसी विपरीत सामग्री के केवल उन्होंने सामान लेकर, जिसका कि सिराजिद्दी घोड़े पर लाय लेने वाले दरम्यान कर ली जा रही है। दरता जी अपने 25000 फूडों के साथ उत्तर की ओर बढ़ा। उसे जनको जी तिनकिया और बाबूर माजी-उद-दीन को अपनी गृहस्थी से 15 मील पीछे लटकामें लोकपाल तस्कर रहने का आदेश दिया।
जिले नोवंबर पहले बुधवार के लाय दरकिया में दिल्ली की तरफ जाने वालों से मुख्य विद्यालय तथा बाजार पर आक्रमण करने वाले किसी भी आकस्मिक अब्दाली के दल को दरकिया की ओर जानें ते रोका जा लेने। जब अब्दाली ने बोला कि दरता जी तिनकिया अपनी ही नक़ली सेना लेकर उसकी युगल पर पहुँचने से पहले रोकने का आदेश दिया। उसे लाय शुद्धिया के दलकिया में सत्य अर्थ से नदी पार कर शहीदी और सुरक्षा नगर लेने हुए तीन दिन बाद आने का अपना निर्यात बदल दिया।
इतने बाद आने पहुँचे भाग की ओर बढ़ा और 23 दिसंबर बाजार में दरता पहुँच गया। अपने युगल रिकार्डों और गवाहों तोड़कर उसके साथ वह रच्य आगे बढ़ते हुए दरता की ओर लगातार नदी को पार करने की आक्रामकी।
दरता जी बड़े आदेश के साथ आगे बढ़ा था परन्तु जब उसे मालमत हुआ कि अब्दाली का अर्थ लंबे तथा विपरीत पहुँचे में अभ्यास है तो उसे बड़ी निराशा हुई। दूसरी और उसे दूसरा जनकों की मोर्चें का आक्रमण करना पड़ा जिसमें बहुत से सैनिक मारे गए। इस प्रकार अब्दाली के तस्कर जी की नक़ली भी तरह प्रभावित हुई किया जा सका। जबकि मारा का पता की चाकू हानि हुई जो करीब 4000 मुताबुक था धाकाल थी। 24 दिसंबर की रात अब्दाली ने अपना पूरा विपरीत उत्पाद दिया और बुढ़दुख घट पर नदी को पार करता हुआ
सहारपुर चला गया।

दर्द की लौट कर दिल्ली आया और उसने अपना विदिषा उड़ाए और रुपराम कोजारी के तरक्की में जान दिया। वह सबसे मेरठ जा कर अब्दाली और फेलें की समझत शिक्षा पर आकर्षण करने की सैयारी कर रहा था। पेशवा ने मल्हार राय होलकर बहूत पहले दर्दा जो की सत्यप्रति के लिए शुक्लाल जाने की आज्ञा दे दी थी। लेकिन उसने राजपूताना के बालवाड़ा तिले से जाने में किल्ला कर दिया। बालवाड़ा पर मल्हारराय ने चैरा डाल रखा था। संभवतः वह अपनी की दर्दा जी की सेना से मिलाना नहीं चाहता था। वह नवीब खाँ के विल्ल लड़ा भी नहीं चाहता था। बालवाड़ा के तिले का दो माह तक चैरा रखा। दर्दा की अब्दाली और फेलें की समझत शिक्षा के शिक्षा परिक्रमण तब तक के लिए डालने का प्रयास कर रहा था। जब तक मल्हारराय होलकर न आ जाये। मल्हार राय ने किल्ला करने के दर्दा के कम करने के लिए यह तर्क दिया कि पंजाब से सामसन तिनिध्या और फुलकी के नेतृत्व में से नारे आने के बाद जब दर्दा जी तिनिध्या ने यह आलोचना की कि उनके पास पर्याप्त सेना है ती उसने शुक्लाल से जो सत्यप्रति की माँग की थी बाद में वह मांग रद्द कर दी थी। बुद्धिपाल के पास पहले युद्ध के बाद जलाको जी ने मल्हारराय के पास घुरने सत्यप्रति की मांग की थी। मल्हार राय होलकर घुरना। जनवरी 176 को चल पड़ा था।

45 दुर्रारी घाट और बरारी घाट का घाट और दर्दा जी की मुक्ति

अब्दाली अब्दाली ने शुक्लाल को एक घाट में छोड़ दिया। तथा भेंट लोक युद्ध में खिलारे बुनी की जोर बढ़ा। यह जगह दिल्ली से
उत्तर पूर्व में सात मील की दूरी पर है। इसके सामने जगत पुर का घाट है।

अब्दाली दूसरे किनारे पर खास के कुछ हिस्से का सुरक्षित भाग की घोषणा थी। जिसके क्षेत्र में वह नहीं पार कर सकते समय बहुत को आक्रमण करने का अवसर दिये विना पार पहुँचा जा सके। दिल्ली के पास से पार खाना उठाने के लिए समय न था। क्योंकि दिल्ली के किनारे पर क्षीर द्वारा उसके विद्रोह प्रभावशाली मौलाओं की वारंटी की दिल्ली के ठीक उत्तर के घाट दल्ला की तिन्द्राचा के रक्षाकर्म द्वारा रक्षा की गई थी। दल्ला की स्वर्य दिल्ली से सात मील उत्तर की ओर मबूत पड़ाई की तलाशी में अपना शिकार लगाया हुआ था। दल्ला जी ने अपनी सेना को कुछ इस तरह विभाजित कर रखा था कि अब्दाली सैनिकों द्वारा किसी भी स्थान पर आक्रमण रूप से नसीब पार करते समय उनका शुक्राक्ष नियंत्रित किया जा सके। परन्तु, नीति कई स्थानों से पार करते योग्य है तथा जनवरी के कोहरे में ढेर निकले भागों पर सबरू रखा बहुत मुहिम था क्योंकि दल्ला जी को अब्दाली के झुराकर कोई शुरुआत न थी। इसलिए उसे जगत अनुभव पर ही निर्भर रहना पड़ता था। नसीब पार करने का प्रबन्ध करने में तीन दिन लग गये और अन्त में अब्दाली ने झुराकर गार्ड पार करने के लिए पसंद किया बहुत शुरुआत अत्यन्त अविच्छेदित और कठिन था। यह स्थान दिल्ली से सात मील उत्तर की ओर है।

दल्ला जी ने इस बगल के दक्षिण में पार करने के स्थानों पर बहुत निर्भर रखी थी। भारत में गोष्ठ लेने के लिए अब्दाली ने छोटे छोटे कल तभी पार करने योग्य स्थानों पर पेश होते ही तर्क मुख्य सेना में रखा बदरपुर चला गया। और बहुत ही नसीब पार करने का प्रयास किया। नसीब पार करने के बाद झुराकर आ गया क्योंकि शायद वहाँ शुरु द्वारा सबसे कम रक्षित भाग था। वहाँ नसीब दो धाराओं में बंट गयी थीं जिससे बहुत में एक रैली का दौरा बना।
गया था । जिसके उपर मोटी और तमन्ना घास बुरी तरह नगी हुई थी । यदि इस घास में बिघारे तमन्ना लेट जाये तो बुरा गज की दूरी है देख पाना या निवाचन कर पाना असंभव था । जब तक कि कोई बिल्डुल नदी के बिनारे पर ही न पहुँच जाये । इस रथण को घाटी के दिकी भी हिस्से से देख नहीं जा सकता । न ही इस रथण से पार किये दक्षिण बिन्दु तेस्रे। इस रथण से देख जा सकता है क्योंकि उस रथण पर पूर्वी जोड़ी की ऊपर की ओर उठ जाती है और उत्तर की ओर के दूरी को ग्रहण कर देती है ।

हुरादी घाटी की सुडाई 10 जनवरी 1760 को हुई थी ।

उस दिन अति प्राचीन एक के बाद एक दलता जी को अपने रक्षकों पर नक्स पार करने वाले हुरादी और लेखों द्वारा आक्रमण करने और उनके लाभ की व्यवहार करने के कारण आक्रमण हुआ। दलता जी को स्थानीय देखने के लिए अब्दाली की यह एक बात थी । परन्तु अब्दाली अर्थ ही गठित हुआ और उन्हें एक विल्ड्स मेडाल पर बैठे हुए अपने उस विचार से, जिसके अन्तर्गत अपघात पर रही थी, कोई सहायता ली ।

उस दिन वह मलदार अपसे और दलता के गायन से गुजर के अपने शहीद को बैठा दिया था ।

जितने नगर की दीवारों में पिस्तौल बनाये । परन्तु यह यह दृढ़ता कारण था जिसके कारण अब्दाली ने जीवन की ओर नदी को अपने रथणों से एक साथ घर किया और दलता की द्वारा रखी गयी कुछ हज़ार की तेज वाली प्रतीक दहली तेज पर रखी तौफ़ी के पार कर रही थी तथा दहली ठीक सामने तैरकर आ रही थी मोटे तौर पर विश्वास के आप उन छाया वालों से मिल कर बनी थी जो तलवार और लेखों को रखने में अपने में बनाया था, जबकि अर्थ ही लेकन थे और नौगियों तथा काबूरों से युक्त थे ।
फ़िल्मकुप जब भी दूर की नज़र दौड़ी तो मराठे नुकसान में
तथा ठुकरे लाम में रहते थे। जब लगभग तभी मराठा दुःखियां भारी जनहा नि
के ताथ उखाड़ की गयी थी तभी जनराव बनले नामक कुल। दुःखियां हैन्य
अधिकारी से दलता जी को सुनना मिली कि शब्द की आधि से अधिक सेना
ने नन दी पार कर ली है। दलता जी ने बया जी तिनिध्वना को बुरादी घाट
की रक्षा में जनराव की सहायता करने के लिए मेहरा जो बुरादी गांव से करीब
गीत में दूर है। जब दलता जी को यह समाचार मिला कि बयारी 30000
दुःखियां के साथ देश दिया गया और वह स्वयं गोली लगाने से मर गया है
तो दलता जी तिनिध्वना ने अपनी पूरी सेना को आले पीढ़े नन दी तट पर आने
के लिए कब्जा। उसने परिचार की ओर से बुरादी पहुँचने का प्रयास न कर
दलित-परिचार के जगतपूर दौड़ेकर बुरादी पहुँचने का प्रयास किया। पहले उसने
एक साधारण नाला पार किया उसके बाद द्रोह की तरह अन्तर्निबिर धारा की।
जब वह उस भाग में पहुँचा तब बात उगी हुई थी तो उलकी दुःखियां तैना न
तो प्रौद्योगिकी बनाये रख ली और न की किती महसूस में आगे बढ़े लोग। घास
के बुछड़ों में नैटी हुई झेलने की पैदक सेना ने घास और ते मोलिया घासी
शुष्क कर दिया। दलता जी तिनिध्वना का आगे बढ़ना अन्तमय नहीं दिया।
बानी जी के, जो मना करने पर भी दलता जी के साथ आया था, दाख़्या हाथ
में गोली का पाया लगा। इस तमाचार के पैले ने मराठे के मानसल पर दुरा
प्रभाव पड़ा। तीनिक सेना के लिए पीढ़े लीटो लगे। मृत्यु नितिनह लगे लगी
थी। 14 फिर भी मराठे की सम्बन्ध तमाचार वर्धी तथा झेलने के बन्दरों के
बीच महत्त्व डोड़ ही उठी। झेलने के पास में पहले से पकड़ी हुई आदेश-आदेश
तैयार बन्दरों थे। मराठे के लाभे मोदी का आतान, प्रम और श्राव की दुःखिया
की बाधाएँ थी। घोड़ों को पग पग पर स्वाना पड़ता था। बन्दरों से गोलिया
पर गोलीया कामी गयी। प्रत्येक बौली के तात्त्विक र्मालिका तिरावरी और जोड़कों का झाड़क खोलना शुरू हो गया।

बन्दूकों की बाहु और धारकों की वीधायर माध्यम की सिनिध्या और जनकों की सिनिध्या ने हुई। बाहु की ओपन में गाढ़ कुल बन्दूक गई बैठे थे। दर्द दंत का जोड़क पास की बुस्मुटों में पंजन गया। उस क्षण में भी दर्द दंत को उसने ताले भी घायल नहीं रहे। तीन बुस्मुटों के बन्दूक बरातर होते राहे। कुल बृहार ने सिर के रीकाना बाध्य कर गोली मारी। गोली दर्द दंत की आँख में लगी। वह दूरी तरल घायल हो गया। मारात्मक निकलने वाले ताले घायल हो गया।

माध्यम की सिनिध्या और जनकों की सिनिध्या कुलक लेकर जाय हो घायल हो गया। उसी क्षण में वह युद्ध क्षेत्र से बच निकले। उसे तार का ताल माध्यम की सिनिध्या भी निकल गये। उसके बाद कुल समय तक लड़ाई चली। बर्बर दर्द दंत की पतल भागीरथी बाई बी हो चलें मराठे कौट कर हड़कर हुए।

नप्पी आंग के गुरू और फैला सरदार कुलबाहर ने धारक दर्द दंत की लाए व्यवस्था और अपनानित किया। उसके बाद दर्द दंत का तार उसने काट दिया। वैसे ही दर्द दंत की गुल्मुक का सांर शुरा विद्वांस-उद-दीन दिली चोड़कर हरम और समान के तारे मराठू पर कहा गया।

राज्यविद्याओं ने जनकों के का 25 मील तक बीजा किया। इति लड़ाई में बदन्त राव जड़ने, बया की सिनिध्या और गाड़ प्रति सिनिध्या सूख व्यवस्था भी। माल्हारराव हौलकर अपनी दिली से 150 मील की दूरी पर था। जनकों की रेवाड़ की दिली में बल निका जिस और शिविर स्थापन को देखा सिनिध्या के दीवान राम की अनलय धारीकार के तारे निका था। पहले
दिन की कड़ी और लम्बी उड़ान के कारण अच्छा विभिन्न घाव के दर्द के कारण 
तिलिधा के लिए घीड़े पर बढ़ना लम्बव न था। क्योंकि तारा सामान पीछा 
करने वालों ने लुट किया था फिर भारी होने के कारण पीछे लुट गया था। 
तारी तेला में न कोई पालक थी और न उठाने वाले। पालक के स्थान पर 
वारपाई का न्यून किया गया। और तैनातों ने घोड़ों को दुलतों के पास 
ढोकोर रचना भारवाहक के रूप में कार्य किया। और जनों जो इस पार 
के लाया गया। इस प्रकार उस दिन 30 मील पार करके, जनों जो आधी रात 
के समय अपनी दूरी हुई तेला के अवसरों के साथ अपने गिरफ्तार में पहुँचा। दंभा 
जी की मृत्यु और उल्लोह तेला की बार का समाचार पाकर तारा गिरफ्तार निक 
में डूब गया। और बीविक पुकार होने लगी। 16

4.6 सहायकराव शाऊ का दिल्ली पर आग्रह 1760

सहायकराव शाऊ का श्रेष्ठ परिवर्तन

लोग इन्हें भाऊ शाहब या भाऊ कहते थे। इनके पिता चिन्मयनाथी 
अय्य फेशा बाबूराव के साथ गुडार अभियान पर जाते रहते थे। जब भाऊ 
करीब एक माह के थे तो उनकी माता का स्वर्ग्यात हो गया। इनकी दादी 
राधाबाई ने इनके बचपन-बालारा विशिष्ट-दीक्षा स्तवर में प्रदान की गयी। 
सहायकराव राव बाला जी बाबूराव का चेयर भाऊ था। इन्हें राजनीतिक 
विशिष्ट त्योला में मिल। बाबूराव की मृत्यु के तीन चार माह बाद चिन्मयनाथी 
अय्य की मृत्यु हो गयी। 17

भाऊ के जीवनकाल में ही शाह की बायरी फेशा के हाथों में 
पहुँच गयी थी। भाऊ का उत्तरार्थ विद्यारी उसकी भी अपेक्षा निर्भर था। फेशा 
का दर्शार पूना पहुँच ही चुक था। उल्ला तारा और उनी पहुँच गया। परंतु
फेलाई के राज्य में कोई भी बहुत बिखे थे। माथ के बाला जी बाजीराव
ने अपना प्रधानमंत्री बना लिया। बाला जी बाजीराव खुश राजनीति था
और सदाशिव राव माथ शुभवीर था।

सदाशिव राव माथ का दिल्ली पर आक्रमण १७६० 

जब दल्ला जी की मृत्यु का समाचार दक्षिण में पेशवा के अधिकारी
नगर विवाद में पड़ा तो दक्षिण का कोई भी व्यक्ति इस बात पर विवाद न
कर सका। सभी को विवाद था कि यदि वह अब्दाली ने हरकर भगा न
सका तो कम से कम उसके आक्रमण को चिंता अवधार कर देना। पेशवा ने अब्दाली
से टकराने के लिए पुनः तैयार किया। इसी समय मराठों ने
उदारियों उदारीयों की देशाई में बड़ी जोत पाई। निगाम से उक्ता आधा
राज्य मराठों ने प्राप्त किया। उन्होंने बाद तदाशिवराय भारू ने सम्पूर्ण दक्षिण
को चीड़ने का विचार किया। तो नवंबर 1760 को सरदारीकर की
देशाई में दल्ला जी की मृत्यु का समाचार मिलने के कारण उसे वापस लौटा
पड़ा। पेशवा ने सदाशिवराय माथ की सेना का नेतृत्व लिया। विवादसराय
को ग्राम्य सेना पारर और सदाशिवराय माथ को उप सेनापति कराया गया।

14 मार्च 1760 को मराठा सेना पद्मुर से उत्तर की ओर स्वागत
हुई। मानापुरुशों, बाबन्दार भोले, महंतराज विठमान आदि सरदार
विवादसराय के लाख 4 अप्रैल 1760 को बुधवार पार 21। मराठा सेना
दक्षिण से उत्तर की ओर चली गई तो इनके लाख 15 हजार पिंडरे और 30 हजार
पेशवा के नैन थे। पिण्डरियों का काम मुताब का वाह बायलों को अकिर्त
करना, भ्रान के सामने को मुट्ठ लाना, धर्म के साम्य पात-धाता, इत्यादि
करना था। सेना में 8000 गोले थे जबकि 20,000 गोले की आवश्यकता थी।
तमन्न करायें और सरारी चीजें बाबुलाहों बैठी और बैठी की उसकी धीमी गति।
सब हुए होने के कारण गति तेज करने में मुखियों थे ।

अब जानले ने रघु नाथ बन्ने के पास सन्तोष की चर्चा
की कि किस का माफ़ लेंगे हुं। चम्पारण से उत्तर है : एक रिकार्ड में लूटेदार के नीचे
फिर दिनांक में आधार का नवाब ही करिया। बाबु लालबंब ने इस
तरह चर्चा हुई हो था कर दिया।

इसी समय गोविन्द प्रसाद ने सुरेन्द्रनाथ जात के दखली मूँड़े में
कारामारी कर दी। जात नेता ने उस जगह बहुत बड़ा रिकार्ड बनाया जिसे
रामगढ़ कहती थी। जिसे नजीब ने अधिकतर कर दिया था जिसे बाहर में अंगीरद
कहा गया। गोविन्द प्रसाद ने इसके आत पास तुलना पाट की। मकारराम
होलकर यह कार्य दिया था कि मरहतपुर बाहर जा नेता का जोध शांति कर
हुआ बाये। सदाक्षिराज भाँधा को धन की आकाशगंगा थी। वह सुरेन्द्रनाथ
रामनाथ को अनेक साथ के आया। उसे भारों को जगा अन्ध और घाया दिया कि
एक महीना बीत गया। सदाक्षिराज भाँधा के तार श्यामदास बाहु हर बिन्दा
रिकार्ड लिया कर, माना जा पाया गया, अंत जी मस्तिष्क कर, माना, निम्नाकर
आदि अन्य तरुण थे। राजा की गायकवाड़, ज्ञानिर्देश गाथा तथा अंत
का बाय उसे रानी के में भिड़े। भाँधा जब ने निकाला लगातार गोविन्द प्रसाद ने
निम्नता हुआ कि भागवानदीला से निकालके अपनी और मिला की। इसके
अंतरिक्त गोविन्द प्रसाद हुई में 25 लाख रुपये वकुली के रूप में उसके
लिए भी लिखा।

भाँधा ने उत्तर भारत के सभी विभिन्न सरकारों को नव निकाले
विदेशियों को हिन्दी स्वातंत्र्य से बाहर निकालने के लिए मिल के रूप में अपनी सेवा
को मराठा सेना के साथ मिलने के लिए आरंभित किया। गुजरात के
क्षेत्र-उद-दीन खाँ बाबू, जयपुर के माधवसिंह, हुल्लंगर के हिन्दूपुत, अवध
के नबाब शृंगा-उद-दीला, तथा गोटा बूंदी के तथा अन्य रियासत के राजाओं से
अपील की गयी परन्तु उनमें से एक भी इस कार्रवाई के समय मराठों के साथ न
आया। वे तदनुसार रहकर दोनों की बीच की गतिविधियों पर नजर रखे रहे।
अबमद शहीद अबदली स्वयं शृंगा उद दीला जो अपनी तरक्की मिलाने की कोशिश
कर रहा था इत्यादित वह वीजाब के गम्भीर अनुपात में आ गया था। उसने
शृंगा-उद-दीला से मेल करने के लिए नजीब खाँ को भेजा परन्तु गोविन्द पन्ना
हुसैन बा का प्रारंभ बीच में होने के कारण, उसे बिना जीवनेस, शृंगा उद दीला से
मौत नहीं हो सकती थी। जब तक नजीब खाँ ने मुलाकात न हुई तब तक शृंगा
उद दीला कहता रहा कि वह मराठों के साथ है। नजीब खाँ ने इटावा का थीरा
का लिए जो प्रमाण उठा दी कि वह आए बना लेने वाला है। इत्यादि
गोविन्द पन्ना के थाने-दराज भाग गये। तब नजीब खाँ और शृंगा-उद-दीला की
बिल्ले में मुलाकात हुई और नजीब खाँ ने उसे अबदली की ओर भिड़ा दिया।
उसने राजा विश्वराज अमू बम्यल नहीं पार कर सिद्धियों और
होल्कर से दिल्ली। गोविन्द पन्ना ने उसे लिखा कि बलदी आओं ली शृंगा-
उद-दीला अपने पक्ष में मिल जायेगा। इति: अमू ने आगरा पहुँचने की बलदी
की लेकिन गम्भीर नहीं में बाहु आ जाने के लिए 10-15 दिन नफ्त हो गए।
उसी समय उसे खबर दियी कि शृंगा-उद-दीला अबदली के पक्ष में मिल गया।
अतः उसने लीबा फि भारतपुर नरेश को साथ लेकर आगरा के पास बहुना नहीं
पार कर नजीब खाँ और अबदली को अलग अलग हराना चाहिए। इति समय
अबदली अनुपात में था। नजीब खाँ और शृंगा-उद-दीला बिल्ले में थे।
गोविन्द पन्ना इन दोनों के बीच इटावा में था। अबदली के पास 30,000
कौर, नवीन और शुभा के पास 20,000 रुपए तथा गोविन्द पन्ना के पास करीब 8-10,000 कौर थीं। गोविन्द पन्ना से मिलकर शुभा उद दोला और
नवीन दोनों को पहले हरकर अब्दाली से टकराकर केना, माज की योजना थी।

अपने पंत को लिखा कि अपने प्राण की सब नाथे युना के दक्षिणी भाग पर है आये। माना की पायुषक व 3000 जात भाजु ने युना पार शहीदाबाद में पहले की योजना थी। इसी समय उनके निकाल की तुमा उद दोला और नवीन दोनों
अब्दाली के पास जा रहे हैं। अपने संसारिक राज भाजु तब सतारहों और जा टों
को लेकर आगरा आया। परन्तु गोविन्द पन्ना ने नाथे न अभाव की थी। नवीन के
जन अधिक था, अपने अब्दाली के दो के हस्ताक्षरों को आगे आगे होने का
विचार किया था।

नवीन-उद-दोला “नवीन खूं” और शुभा-उद-दोला अब्दाली से
संबंधित थे भी। तब सदाशिवराज भाजु ने अब्दाली को हराने के लिए नई
योजना बनाने लगा। उन्होंने लेखा कि मुहरा, दिल्ली, इंदौरा आदि युना
के दक्षिणी किनारे के रूप में चित्र कर उत्तर की ओर ले युना पार कर अब्दाली
को पीछे छोड़ दिया जायेगा। योजना के अनुसार भाजु उत्तर की ओर चलना हो
गया। अलिगढ़ तक सरायों की चौकियां रखी हुईं। अब्दाली के अम्ब-वात
का हेम जलाकर लाफ कर देने का, लेखा के हेम में घुसने की अप्रवाहु उड़ाने का
और शुभा-उद-दोला के हेम में दी प्लाद मचाने का काम उन्होंने गोविन्द पन्ना को
सौंपा। इसके बाद सदाशिवराज भाजु 16 जुलाई 1760 को मुहरा में आया और वहाँ
से उसने बलवंतराज मेंनेर्के, जनकी की सिनिध्या, माधव की सिनिध्या, मल्लार
राज होलकर को दिल्ली जिल्हे के लिए भेजा गया। मल्लारराज होलकर के
पीछे पीछे झारकिंग खान गार्ड अपने लापत्ते के साथ आया। उन्हें दाराकिये
गये गोलबारी से दिल्ली जिल्हे में टहलता रहता।
4.7 दिल्ली पर विद्रोह

दिल्ली के विलासी ने फाटक कर रखा करने का आयोजन किया। 
मल्लखराब बॉल्कर ने माधव जी की सिद्धिया को दिल्ली जीतने का काम तैयार। 
विश्वास उद दीन माधव जी की सिद्धिया के साथ था। विश्वास ने उत्तर कि 
किले की दुर्गाँ पर बड़ी तोंडें और लोटू कांपों के हैदरों में अभिनव छोटी छोटी 
तोंडें लगी थीं। ऐसी क्षण में ख़ाइयां छोड़कर घेरा डाल दे और अलग भिक्तों की 
कम्बोर जगत से किले में प्रवेश कर लिया जाये। माधव जी ने किले कंभोर रास्तों 
को जाने के बाद कहा कि मुल्लखाउ वर्षा होने पर ख़ाइया नाले के के रूप 
धारण कर लेंगी और उससे बहू नुकसान होगा।

विश्वास-उद-दीन के साथ माधव जी ने दूर से उन कंभोर रास्तों को 
देख लिया परन्तु अन्ततंत तक वे उस से और अपने साथियों से तक स्थान के बारे में 
हरी जान पाये। साम के समय माधव जी ने बाहरी सतन्त्रता कर कर दी। 
अपने और मल्लखराब बॉल्कर के दल से तो दूर हुए तैनिक और कम्भोर और तैनिक 
लिये। इन्होंने व विश्वास-उद-दीन को लेकर किले की दीवार के नीचे एक बड़ा पहुँच 
माधव जी ने तीढ़ी लगाकर ती सैनिकों को किले के भीतर जाने को कहा। उनसे के 
गया कि अंदर बनाकर किले का फटक खोल दें। तीढ़ी और कम्भोर के तहते सभी ती 
तैनिक फिले के भीतर पहुँच गये। माधव जी और विश्वास-उद-दीन पीढ़ी 
घों गये और 500 साथ पैदलों को बिना स्वागत के फटक के इंद्र उधर है। आए 
आर तांत रोकर कर दीवार से चिंतक गये।

जुम्लेक्शार और उसके साथी मकल के एक खुल स्थान पर पहुँचे। वहाँ 
धर उधर बहुत से छोटी बड़ी बर्तन रखे थे तिपानी उन पर टूट पड़े। इसके बाद वे 
पहलेदारों को मार कर मकल के भीतरी भाग में इस गये और पहाड़ी के बर्तन, कफ़े
और हूँतरा सामन उठाने धरने में लग गये । सैनिक फाटक खींचकर माधव जी
तिनक्षण के बड़े दल को भीतर प्रवेश कराने की बात खुश गये । इस बीच विलोकन
के रक्षक बदले होकर उन मराठा सैनिकों पर हमला कर दिया जिनमें तभी
मराठा सैनिक मारे गये 24।

माधव जी और विलाब-उद-दीन ने बड़ी देर तक प्रतीक्षा की फिर
विलोकन के भीतर शोर और बन्दूकों की आवाज़ें हुनायी पड़ी । वे साझा गये कि
फाटक नहीं हुमेगा और स्वयं विलोकन रूप में ढूंढ जायेंगे इतनी फाटक से
दूर चले गये । विलोकन का मेरा तीन घार दिन और चला ।

छधायो काव जी विलोकन पर वचन से बलब कहा कर लेता था का
था । माधव जी ने बहुत दूर लगा । उन्हें विलोकन न जीत पाने का झांसा खेद
न था । जिनकी घिनता असफलता के कारणों के जानने की थी । जब साझा दिन
बाद छधायो काव जी ने आकर इनकम थाँ गार्ड के तोपखाने से विलोकन पर तीनों
चलवायी और चार दिन के भीतर विलोकन ने छार मानकर फाटक खोल दिया ।

माधव जी ने लगाते पड़े अपने ली सैनिकों की असफलता के कारण
जानना चाहता । जहाँ तहाँ आ क गहरिया बंधी पड़ी थी । विलोकन ने बताया
कि मराठा सैनिक फाटक बनाने की बजाए लूटपाट में चुटके हुए थे ।

मराठों ने विलोकन के विलोकन पर 3 अगस्त 1760 को अधिकार कर
लिया । विलाब उद दीन ने दूसरे दिन धमा लिप्ता शान्त की थी । माधव जी के
बनवाने दिवान खास की लह में चांदी की गोटी चांदे लगी हुई थी, जिनमें
रंग बदलने नगरों की नकारात्मक भी थी । विलाब-उद-दीन ने इतनी जल्दी इस
चांदी को निर्माताएँ बढ़ादा किया कि कुछ देर तक मराठों को पता न लगा ।
लगभग 10 लाख रुपये की चांदी निकाल चुका तब छधायो काव जी ने निकट
करवाया ।

25
आठ ने सुना था कि ना दिखाता तथा अहमदाबाद व वजिर सिद्दाब-उद-दीन की पिछली बुट्टे के वाक्य बाबू बादशाह के हरम में करौड़ों का माल व नकदी है। उसने बादशाह व महारानी की गुब्ब आवंगत की, जासूसी करवाई परन्तु कुछ पता न था। उसने फैस्ला बाला की बाजीराव को यह लिखा कि सैनिकों के लिए अनाज व पद्धारों का चारा समाप्त दीने को है वे मूँगे से मर रहे हैं। सम्पत्ति भर से अधिक का प्रबन्ध नहीं है, लघुता जल्दी रहे।

सिद्दाब-उद-दीन ने दीवान खास की आधी से अधिक चाँदी निकाल ली थी। आठ की महिमा में बहुत थी। उसने दीवान खास की चाँदी भी उठाई लिया तथा उसने नौ लाख चाँदी के लिखे बने जो महीने भर के खर्च के लिए पर्याप्त था।

सिद्दाब-उद-दीन के पास एक करोड़ रुपये पड़ने का और पचास लाख हरम की शुद्ध भी, दस लाख रुपये का धन और कमाया। इसी में उसे कुछ अपनी घरेलू और घरेलू की भी देना था। आठ ने जब सिद्दाब उद दीन से निकाल गयी चाँदी की मांग की तो उसने मना कर अपनी तमाम घरेलू चाँदी सहित आठ मन मसीह कर रह गया। वह सिद्दाब उद दीन को नाराज नहीं करना चाहता था।

आठ ने दुर्बलम से रुपयों के लिए मांग की तो उसने बाबाब दिया अभी मेरे पास रुपया नहीं है। चाँदी के लिए बहुत परेशान था। पैसा का पास बार बार पता नहीं रहा। अहमदाबाद आबादी को शक्तिकिरत आठ के मुफ्त में दिली आने का समाचार भिज गया। दीवान खास की चाँदी निकाल लेने पर दुर्बलम जात आठ से नाराज था। नाराज होकर वह मराठों का लाठ छोड़कर भरतपुर लौट गया। लाठ ही मराठों के हाथ से तीन सप्ताह जाल रैला निकाल गयी।
4.8 कुंबपुरा की लड़ाई ॥ 17 अक्टूबर 1760॥

अक्टूबर के पहले दिनों में स्वदेशीवर भाँड़े ने अपना विवाद सीताराम तराय के पास नदे के लगाया था । यहाँ से उसे कुंबपुरा की और प्रस्थान किया । निवास में मराठों को अभाव का लाभ करना पड़ा । निवास में दिल्ली की मौजू समुद्री पूर्वी दौआव की तरफ से प्रस्ताव की जाती थी । परन्तु यह भाग नजीब खाँ और अहमदखान अव्वाली के अधिकार में था । साथ ही युद्ध में बाढ़ आई थी । जिसे आवागमन और ध्यानार्क आवागमन में किया था । आज - घाटे के साथ धम की भी हार थी । फलस्वरूप पाषाण व मुख्यांक की शासिक शाखा में कभी आ गयी थी । इसी तैना के नैतिक कल पर भी प्रभाव पड़ा । यह लड़ाई सेना और मराठों के बीच 17 अक्टूबर 1760 को हुई । जिसमें नजीब खाँ के भाई नजाबत खाँ, कुशर खाँ और मैमियां मारे गये । युद्ध काल में दोनों के बाद तरंगसंद के दुबेरार अबहुस्मान खाँ का सिर मराठों ने काट दिया था ।

कुंबपुरा की भौगोलिक स्थिति

कुंबपुरा नगर दिल्ली से पंजाब जाने वाले राजमार्ग पर पड़ता था । दिल्ली से करीब चालीस किलो मार का फालना था । यहाँ हेम नहीं दिखा हाय की गयी । मिट्टी से बना एक मसलिर और रैलो स्तंभ निर्माण है । इतिहास दासान उत्तर से दक्षिण की ओर है । जिसका स्थल तल से घिसका ऊंचाई 700 से 800 फुट के मध्य है । ध्यानार्क रूप से नाम को भी पहाड़ीया नहीं है । अकाली पर्वतमाला की चटकनी की श्रृंगारिणी गुफरात के उत्तर में आबू पड़ा । सेतेर दिल्ली नगर के ठीक उत्तर तक फैली हुई है।

कुंबपुरा नगर के घाटों और घी हुक्का है । जिसमें मंदिर मस्जिद
मकान खुलों से छिपे थे। उनकी छाया में अनेक पशु पक्षी चिंतारूप एवं पुकारते।
पक्षियों के चक-चकक की लगातार जारी खुल खुलना, इन्हीं सब बातों के कारण
शायद नगर का नाम कुंभपुरा रक्षा गया होगा। यहाँ ते कुछ ही मीलों पर कुश्लेश',
की शुरुआत हुई ही जाती थी।

कुंभपुरा दिखी की छुट्टी चर्चा:

खुलों की शीघ्र आई से कुंभपुरा की अन्य प्राचीर बाकी थी।
प्राचीर का पर्कोटा पुरे गांव को छैलता था। गांव के लाखों ही एक सबूत
भू किमा झड़ था। बाहर के पर्कोट के तीन मुखी महादार थे - परिचित की और
कराल दरवाजा, उत्तर परिचित में निमायली दरवाजा, दक्षिण पूर्व में मंगलदी
दरवाजा था। तीनों महादारों के क्षट काफी उची थे। नुकीली बड़ी बड़ी कीलों
से लैंड तथा चट्टानों की तरह क्षट मजबूत थे। तीनों महादारों पर तीन ती
गन के फाके पर चट्टानी दीवारें परदें नुमा बनी हुई थी। कोई भी आक्रमण
करने आता, तब भी लीड महादारों पर तीनें दाग ही नहीं लगता। न ही
मतवाले हाथी दारा दारा को तोड़ा जा सकता था। सामने से तीन आक्रमण
पर दीवार रोक केली थी। पर्कोट के बाहर 8-10 दाख जोड़ा खेजक था,
जिले में जनता पानी मारा रहता था। पानी में भिड़े लंबे थे।

कुंभपुरा दिखी का किले दार नजीब खाँ की चपेटा आई नजाबत खाँ
था हम साहबत प्यारी था। और अपने निर्देश स्वयं लेता था। फिर भी की
बात में आक्षे कुछ करना उसके रेखामै न था। वह नजीब खाँ का किले
कर फिर भी उन्हीं हुंकार अखारे रंगकर शाहन से रहता था। उसकी रेखा में 8000 लंबे
फिलें में थे। कुंभपुरा में खुल के बादल मंडराने लगे। तो वह फमकता। इससे पहले
हम नजीब खाँ का बुल खुल शाह, तरह-तरह का उक्कीदार अखारसंग को तथा निम्न
खाँ तीनों वेंकिल के चलकर कुंभपुरा घाटी से ही यमुना पार कर अन्तर्वह थे।
घुले वाले थे। यमुना के पुर्वी किनारे किनारे नीचे की और खिलकी हुए उन्होंने अवबाली से मिलने की योजना करायी थी फिर यमुना में बाढ़ थी। युद्ध की प्रशंसक तथ्य बननार तालाब के साथ फिनारे किनारे बढ़ा बुझिका था। नजाबत खाँ ने खिले में दो तालाब बोरी खोदी जमा कर रखा था। लोगों सरदारों के पास अपने नस्ल के 12,000 कंदाहारी घोड़े थे तथा मजबूत काँडी के सवार थे। वे बलद से बलद अवबाली से मिल जाना चाहते थे। उनकी योजना थी कि लब मिलकर मराठों को बर्बाद कर दे। और उसके बाद अवबाली के ताल अपने देखा लौट जायेंगे।

लोगों सरदार यमुना नदी की बाढ़ उतरने की राह देखा रहे थे। लोगों नजाबतखाँ की बुढ़दारी और लोग तान कर खिले की प्यारिति से अच्छी तारह परिवर्तित थे। इनकी अफगानिस्तान की मिलटी पर बहुत ध्यान था। वे खिले के बाहर विचार बनाए थे। खुदका और घहराए के बीच वाले रथ रान पर उनकी शाही चढ़े ताने थे। खुदबान ने नियामती दरबार के बाहर ही अपना देखा ताना था।

नजाबतखाँ ने लोगों सरदारों से भिड़कर मराठों का मुकाबला करने का प्रस्ताव किया लेकिन वह इस को गिना में लग्ने न हुआ। खुदबान घण्डी प्रशंसक का व्यभिचार था। नजाबत खाँ ने अपनी 8000 लोगों को खिले के लोगों मजबूर थे। प्राचीर के पास तथा खुदबान के पास तैनात कर दिया। और कहीं पहुंच लगवा दिये। इतना चुर्स प्रशंसक के गान्धी श्री उसके मन में हर समय था कि यदि खिले का पता लगा तो उसका तानाशाह हो जाएगा। मराठा तेना की जब उसने देखा तो उसका क्रोध काप गया। वह तुरंत घोड़े पर लाया होकर खुदबान के पास पहुंचा। उसकी बताया कि हुजूपुरा पर मराठा तेना आक्रमण करने वाली है। इतने तरह हजार आख्याय
है। कुतुबगढ़ ने बुरादीघाट की लड़ाई का वर्णन करते हुए अपनी वीरता को बताया। उसने नज़ाबत छोटी की पेटालाई वर ध्यान न दिया।

दोपहर में बुंबुरा के खर्द गिरद महादेव तेना एक बार तोड़े गये। जनता जो तिनिख्यात बुंबुरा पहुँचते ही उसके लिए मन में आग लग गयी। उसकी आखे कुतुबगढ़ को दूर रही थी जिसने उसके काम दर्जा जो तिनिख्यात की गर्दन कटी कटी थी। ख़ाफ़िम छाँ गार्डै 16 अगस्त की रात में आ गया था। उत्तर परिवर्तन वालों ने निभावनी महादेव ने जो नम बुंबुरा के मुकाबले में दामाजी गायकवाड़ा और समर्थ बहादुर की सेनारी ढेर गयी। दिल्ली से चली ही दामाजी गायकवाड़ा तथा समर्थ बहादुर किए रास्ते में सम्भव का, सोनीपत, पानीपत, कर्नाल आदि के छोटे छोटे घाटों का सुस्थित ग्रामीण कर सेनिक तैनात कर रहिये। कर्नाल के पीछे ही सदा बिक्रेतार आए और ख़ाफ़िम छाँ गार्डै के दरों की मिल गये थे। दो वार लोगों का लोकपन्ना व 8000 लैड़ाल सेनिकों को नैक्टर दरों आगे बढ़ रहे थे। आए तालब की अपराजेय के 25000 सेनिक आगे गये, उनके पीछे पीछे यात्रियों के टड़के ग़ौं चल रहे थे। इन सबको पीछे छोड़ते हुए दाया जी गायकवाड़ा और समर्थ बहादुर की सेनारी बुढ़ा ही आगे निकल आयी थी। दोनों की सेनारी शाम होते ही निभावनी महादेव के तामने, खंदिक के बाहर गन भर की हुई पर पहुँच गयी थी। रथियाँ रथियाँ घर गई बांधा सुने कर दिया था।

मंडलदी महादेव के दक्षिण पूर्वी छोटे पर बादन्तराव संतराव, माना जी पायल, अंत्ता जी मनिकस्वर, दरेक, रेमेकर की सेनारी मोड़े है रही थी। परिवक्त कर्नल महादेव के तामने मोड़े बाँधी हुए जनकों की तिनिख्यात घाट नगकर फिर की ओर देख रहा था। उसके साथ ही बादन्तराव महेन्द्रले की ओर हुपरतै सेनारी भी अपने अपने मोड़े संभाल रही थी।

किसे के प्राचीन से नज़ाबत छोटी महादेव सेना को देख रहा था।
उसी भी तेलार्थ केनात कर दी थी। कुलुब्जाहद भी अपने देहरे से बाहर निकल कर
मराठों की तेलार्थों को देख रहा था। उसी भी खेड़क के किनारे अपनी तेला
को केनात किया था। दूसरी ओर खंदक और फिरी की प्रायोगिक के बीच में
अब्दूरस्ताबद हैं और मोहिनी की तेलार्थ नहुँ के बैंकरे में खड़ी थीं। दोनों तरफ
की तेलार्थ एक दूसरी की सामर्थ्य का अनुभव लगा रही थी।

17 अक्टूबर 1760 को शहर सुर्यसिंह के लागत मरा ता सैनिकों ने
कुलुब शाह हैं की तेला पर तीर ब गोलियाँ चलानी शुरू कर दी तथा कुलुब्जाहद ने
बजाव देना शुरू किया। निचे लड़ाई शुरू होते ही उघर नज़बत खड़े ने भी खड़ा नहीं।
शुरूत कुलुब हैं से अफास बन्दूकें आ गए उस्ताने नगी। आगे बढ़ी
दामा जी गायबाड़ की तेला में गोलियाँ घुलने लगी। पचास पचास स्थार
याल दोकर गिरे लगे। आगे बढ़ी तीनार्थ हुरूस्त पीठ आ गई। दो दारा गर
पीठे हटकर उन्होंने तीर कलाना शुरू कर दिया। सामने वाली पैरित से गोलियाँ
की बर्बर शुरू होते ही कर्नाल महादेव के सामने खड़ी जानी जो की तेला है।
" हर हर महादेव " का वज्हकार लगा। उसी तेला बढ़ा बहादुरी दिखा
रही थी। कुलुब हैं से गोलाबारी करने वाले 25-30 सैनिकों को मरा ता तेला ने
तीरों के बीच झाला। वे चीखो हुए कुलुब हैं नीचे खेड़क में गिरे लगे। सुर्यसिंह
हो गया, चारों और दूकान भर गया और म हानी अन्धकार जा गया। दोनों
और से गोलाबारी बंद हो गया।

दोपहर में ही सताकिमरार ने कर्नाल पार किया। कर्नाल के बाद
निशानकाल गाँव ते हुनपुरा गाँव की ओर जाने वाला रास्ता शुरू हुआ। बीच में
खेड़ कोस राइला झाका था। परेश नियम और तैलेन से बढ़ते हुए आगे बढ़ते
जा रहे थे। गोडूर्वे तेला पर भाज हुनपुरा पहुंच गये। उन्होंने स्थिति की
जानकारी की। मराठा लडाकों की शांताती दी । भाव ने आखेड़ा दिया कि महिमतराज तुरंत चालू किये, इब्राहिम खान गार्डी को बल्द के बल्द पहुँचने के लिए संज्ञा नें। बुबब तक तोपें दीती पर लग जानी चाहिए। रात के लगभग बारह बजे तक इब्राहिम खान गार्डी अपने तोपाले संख्या दिखे के मेहमदी महाद्वार पर पहुँच गया। कुल तक पत्रिते जब रहे थे। उनका प्रवास नीचे खेड़क तक फैला था। खासगत पैदार की लेना पहरा के रही थी। वहाँ शहीद फे पत्रिते की रोशनी से बचे हुए तोपों के दीघे बनाये गये। इब्राहिम खान गार्डी इतने कार्य की देखरेख कर रहा था। सुबह का कुंद 17 अक्टूबर के तारे को होगा अतः सारी सेना बढ़नी लो। फिर गार्डी तहरीदार सैनिक ग्राम लगा रहे थे। आधी रात बीतते बीतते इब्राहिम खान गार्डी के तीपे दागने की धमा में मगा दी गयी।

बुबब बुबब मेहमदी महाद्वार के लाभ से इब्राहिम खान गार्डी की तीरों ने आग उगलना शुरू कर दिया। वैसे मेहमदी महाद्वार की ओर से तीरों की गर्ना हुनाई ही। दागा की गायबाई और संभव बहादुर को जोश यद आया। वह जानते ही कि कुलबाग़ हैं राहियर सभी देखने हैं हैं सैनिकों का जोश बढ़ गया।

तीर चलने लगे। कई सैनिकों ने तीरों पर चिंतित साध के से भिजों कर तीर चलाये। बल्द पत्रिते की तरह बल्दे तीर खन्डक के उत पार खुदार झारे लगे।

उसमें आग लग गयी। साथ आते पार के तम्बुड़ों और देहर बनातों में आग लग गयी। कुलबाग़ के छः लाख खार तैकिकों में संघर्ष अक्षर तक करना मच गयी। पीछे आग थी और सारे से बन्दूक आग उगल रही थी। तथा तीरों की वर्षा हो रही थी। कुलबाग़ अग्रणित में पढ़ गया। खेड़क को एक चिन्तित बाबु देखकर संभव बहादुर ने अपने घोटों के लाख खेड़क पार कर लिया उत्कर्ष से ऐतिहास खेड़क पार कर गये। संभव बहादुर के बाद दानाची गायबाई भी अपने घोड़ों के साथ खन्डक पार
लगातार कर गया। तेरे पुष्पकार खंडक पार कर "हर हर महादेव" का जयकार लगाया। केवल बनिया लड़की लड़की का प्रयास करता हुआ चीख लगा।

"मारो मारो दीन दीन" अब तो आमने आमने तलाबणें चलने लगी। तथा गुल्मा गुल्मा की लड़की होने लगी।

तीनों की गयागाथ है सारा पतिनंद मृण उठा। नगर के परवर्दे से मल्हारराव दोलकर श विद्या विद्यात्मक विहूरकर चित्त गये थे। कोहरों के गुल्मा दिखाकर दरवाज पर बिंघा दिखा गया। कौन है दरवाजा। टुटा होलकर श विहूरकर की सेनाएं नगर में घुस गयी। जो आमने आमने उसे काटे झुंझ ता। आगे बढ़ती गयी। मल्हारराव दोलकर नगर के नजारे खाँ वाले पत्थर के बाँधे तो जा किंदे। बाढ़ की आड़ से खार दो। हवाय तैनिक लड़ी लगे।

परिवार के करार के मल्हारराव पर मौरियन खाँ की ता। ता से मनोक मही की की दरस्त ज्ञान की बाणी लगा कर लड़ा रहा था। खंडक के उत पार से मौरियन खाँ भी खंडक प्रतिकार कर रहा था। जनकी जी ने निवासा साधक अपना मासा जोर से खंडक के उत पार ऐसा किया कि वह होड़े में स्वार मौरियन खाँ के तीनी में घुस गया। वह दायी से लिया खंडक के पानी में नगर गया। उसके निराले ही उठकी ताना के ही ताने पर दिये गये और वह खंडक इतने ही उठके दो दावे। हाय, दूर आदि सामान छोड़कर भागने लगे। जनकी जी की ताना ने खंडक पर लड़की की फिटित्व मिली दी। उस पर लग सी मल्हार खूलित्व के तैनिक उस पार पहुँच गये। मौरियन खाँ की भागती ताना की निशाना बना बनाकर मारा जाने लगा।

बाहरिम खाँन गार्थ की तीनों ने ग्लाब कर दिया। उसके ताने मल्हारराव का खंडक के दूर रहे और खंडक था। उसके सात आठ खार पश्चात सैनिक थे, उनका तौला बुनने था। लेकिन उनके पात्र एक भी तीन न थी।
हथर इब्राहिम खाने की तोपों ने खिले की झूठ को गिराना शुरू कर दिया।

पुरुष पर घास लगाकर बेठे नज़ाबत खाँ के बन्दूकबाहरी पत्थर ढके पुरुष भी बिन्दा
दफन दीवार लगे। झूठों से सदा बिवराय बन्दूकाथन पर तबाह तैनातो का
जोर बढ़ा रहा था।

पत्थरों की सजबह में आ गया कि आग की भार और तबाह के आगे
टिक न पासिया। मैनिंग खाँ के मारे चायने की खबर ने तो कहर बरपा दिया।
निम्नलिखित महाकाव्य के पास वाली अब्दुल्लाह खाँ की तेजा उल्ले पाया आगने लगी।
उसने दीवारे से नीचे चलाया लगायी

पत्थरों ने दरबारी खोलने के लिए
चिलाना शुरू किया। जब नज़ाबत खाँ के बदल पुकार खिले के अन्दर सुनाई

dे रहा था। लेकिन नज़ाबत खाँ ने दरबारी खोलने का हुकम नहीं किया।

उसने स्वतंत्र आक्षेप दिया था कि वहाँ कुछ हो जाये पर दरबारी किती भी क्षमा

e में न खोला जाये। अब्दुल्लाह खाँ बोर बोर से दरबारी खोलने के लिए चिला

रहा था। नज़ाबत खाँ कुछ भर के काम में लगा था।

इब्राहिम खाँ गार्ड्री की तोपों ने दीवार पर बड़े बड़े छेद कर दिये।

क्यों देखो आधा कुछ धराकाहरी हो गया। भिगिले दु: पत्थरों से बोक़क जगह

जगह भर गयी। राहनन्द राह रंगार का झारा पत्थर इब्राहिम खाँ गार्ड्री ने

तोपों चलाना बंद करना दिया। राहनन्द राह ने अपना झुकारारों को खिले के

अन्दर घुसाया। खिले के अन्दर की तेजा के छक्के छूट गये और तेजा भाग

कहीं छुए।

निम्नलिखित महाकाव्य खोला गया। लेकिन तब तक दामा जी गायकवाड़े

व तबोर बहादुर अब्दुल्लाह की पीठ पर आ धमके। जबरदस्त पीछा हुआ।

भीतर सबरों ने खिले में जबरदस्त हड़कम मगर की। झांक झांकत खाँ

गिरफ्तार कर लिया गया। उसका कबीला भी कैद कर लिया गया। खिले पर

धरी पटक फटारे ही विजय नगाड़े बनने लगे। सबरों ने इब्राहिम खाँ गार्ड्री
को कन्धे पर उठाकर नावना शुरू किया । महीनों बाद सिरी विध्य महाराणों के
तीनों में पूरे नहीं समा रही थी । फिर का पतन होने के बाद भी नगर व फिर
में बुट पाट शुरू हो गया । विध्यासराव और सदा विध्यराव भाऊ का नारा कुम्भ
हो रहा था । पार्वती बाई ने भाऊ की आरती उतारी ।

दाना जी और सम्बोध बहादुर ने कुम्भाह को पकड़ कर भाऊ के पास
ले आये । कुम्भ भाऊ ने स्वीकार किया कि उसके ही दर्दा जी तिन्निध्वा’ की
गर्दन कटी थी । जबकि जी ने अपने काफ़ा दर्दा जी की मौत का बदला
कुम्भाह की गर्दन काट कर लिया ।

घायल नज़ाबद का कुछ ही देर में मर गया तथा अब्बुरस्मद खाँ का
सिर काट दिया गया । इस बड़ी में लगभग चार घण्टे और लगभग आठ
ती मराठी मारे गये । गोला बास्का का भलोकर सदा विध्यराव के हाथ लगा ।
झोकर और बिंगुरकर ने नगर को बुट लिया । फिर से आठ लाख रुपये नकद
भाऊ को तीप दी गयी । रेड़ी की दो लाख बोरों की बांधियाँ लागे लग गयी
थी । उनका मुल्य हीरा पत्तना से मी कटाई थी 29

नमस्कार करती

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>गोपाल कामोदकर लामटकर: महाराणों का उत्थान और पत्तन -305</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>2</td>
<td>वि.ध्यासराव महाजन और साक्षी महाजन - आधुनिक भारत का इतिहास -84</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>बहरी -85</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>गोपाल कामोदकर - महाराणों का उत्थान और पत्तन पृः 302-305</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>कुम्भावन लला वर्मा - माध्य की सिद्धियाँ -283</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>बहरी -04</td>
</tr>
<tr>
<td>Строки</td>
<td>Содержание</td>
</tr>
<tr>
<td>--------</td>
<td>-------------</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>गोपाल कामोदर तामसकर-भारत का उत्थान और पतन -316</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>वहीं 317</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>तन्यार्क को शृंगेश्वरकर - पानीपत: 1761 44-45</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>वही 46-47</td>
</tr>
<tr>
<td>11</td>
<td>वही 48</td>
</tr>
<tr>
<td>12</td>
<td>वही 51</td>
</tr>
<tr>
<td>13</td>
<td>वही 53</td>
</tr>
<tr>
<td>14</td>
<td>वही 54</td>
</tr>
<tr>
<td>15</td>
<td>हुळ्ळावन लाल वर्मा - माधव जी सिंधिया 149</td>
</tr>
<tr>
<td>16</td>
<td>तन्यार्क को शृंगेश्वरकर = पानीपत 1761 - 56</td>
</tr>
<tr>
<td>17</td>
<td>विज्ञान पाठिक पानीपत -110</td>
</tr>
<tr>
<td>18</td>
<td>हुळ्ळावन लाल वर्मा माधव जी सिंधिया -44</td>
</tr>
<tr>
<td>19</td>
<td>गोपाल कामोदर तामसकर -भारत का उत्थान और पतन -318-19</td>
</tr>
<tr>
<td>20</td>
<td>शृंगेश्वरकर पानीपत- 1761 - 72</td>
</tr>
<tr>
<td>21</td>
<td>गोपाल कामोदर तामसकर -भारत का उत्थान और पतन -319</td>
</tr>
<tr>
<td>22</td>
<td>हुळ्ळावन लाल वर्मा - माधव जी सिंधिया -187</td>
</tr>
<tr>
<td>23</td>
<td>वही 202</td>
</tr>
<tr>
<td>24</td>
<td>वही 204</td>
</tr>
<tr>
<td>25</td>
<td>वही 206</td>
</tr>
<tr>
<td>26</td>
<td>वही 223</td>
</tr>
<tr>
<td>27</td>
<td>विज्ञान पाठिक पानीपत 354</td>
</tr>
<tr>
<td>28</td>
<td>तन्यार्क को शृंगेश्वरकर पानीपत 1761 41-53, 54-56 तक</td>
</tr>
<tr>
<td>29</td>
<td>विज्ञान पाठिक पानीपत - 371</td>
</tr>
</tbody>
</table>